ISSN: 2456–5474 RNI No.UPBIL/2016/68367 Vol-2* Issue-2* March-2017
Innovation The Research Concept

शरद जोशी के व्यंग्य–लेखन में समकालीन यथार्थ

राजेश पासी
शोध छात्र,
हिन्दी विभाग,
वर्धमान विश्वविद्यालय,
वर्धमान, पश्चिम बंगाल

सारांश

शरद जोशी हिन्दी साहित्य जगत के सुपरिचित व्यंग्यकार, नाटककार और विश्व साहित्य के महत्वपूर्ण स्तम्भ हैं। क्योंकि उनकी तुलना अमेरिकी व्यंग्यकार आर्ट बुखवाल्ड से किया जाता है। उनका व्यंग्य–लेखन का क्षेत्र का कैनवास बहुत विशाल है। उन्होंने अपने समकालीन युग की राजनीतिक, सामाजिक तथा सांस्कृतिक अन्तर्विरोधों को अपनी पैनी दृष्टि से देखा और परखा है और इस अन्तर्विरोधों और विद्रूप चरित्रों को बारीकी से विश्लेषण करते हुए अत्यंत परिमार्जित भाषा तथा सार्थक शब्दों में अभिव्यक्त किया है। उनका व्यंग्य–लेखन के प्रत्येक पृष्ठ में आजादी के बाद के हिन्दुस्तान मुल्क की तस्वीर बोलती है। इस रूप में उनका व्यंग्य–लेखन अपने समकालीन यथार्थ को नजर अन्दाज नहीं करना रचनात्मक चिंतनधारा को भोथरा बना देती है। इस तरह उनका व्यंग्य–लेखन स्वातंत्र्योत्तर भारतीय सामाजिक, राजनीतिक क्षेत्र में फैली हिंसावृत्ति तथा नैतिक पतन को व्यंग्यात्मक प्रहार का लक्ष्य बनाया।

शरद जोशी का जन्म गुजराती मूल के ब्राह्मण परिवार में 21 मई, सन् 1931 ई0 को उज्जैन (मध्य प्रदेश) के मगरमुहे की गली में हुआ था। और उनके पिता श्री निवास जोशी पक्की सरकारी नौकरी पसन्द करने वाले व्यक्ति थे। शरद जोशी जी खुद भी सरकारी अधिकारी थे। फिर भी सरकारी तो क्या, किसी प्रकार की नौकरी करने में रूचि नहीं थी।

वे 'नई दुनिया' (1953) पत्रिका से 'आकाशवाणी' (1959) केन्द्र तथा वहां से मध्य प्रदेश के सूचना विभाग में (1955–1966) सरकारी पद पर कार्यरत रहे। वह बड़ी मुश्किल से सरकारी नौकरी की क्योंकि आला अधिकारियों के विरोध के कारण एक दिन 'सँभाल तेरी घोड़ी और बन्दे ने नौकरी छोड़ी' कहकर सरकारी नौकरी से त्यागपत्र दे दिया। शरद जोशी बहुमुखी प्रतिभा के धनी लेखक थे, जो आकाशवृत्ति के स्वतंत्र विचरण करने वाले व्यक्ति थे तथा अधिक से अधिक किसी वृक्ष की डाल पर आश्रय बना सकते थे किन्तु शरद जोशी जी एक मुस्लिम कन्या अभिनेत्री और कवयित्री इरफाना सिद्दीकी से प्रेम किया, शादी की, गृहस्थी बसाकर तीन बेटियों (बानी, ऋचा और नेहा शरद) के पिता भी बने। बेटियों की शादी करने के पश्चात् मुम्बई जैसे शहर में एक फ्लैट खरीदा।

मुख्य शब्द : हरिशंकर परसाई, व्यंग्यकार, युग–चेतना।

प्रस्तावना

शरद जोशी की पत्नी इरफाना सिद्धीकी जी आर्थिक संघर्ष के सन्दर्भ में कहती हैं कि –''भोपाल में क्योंकि लेखन में बहुत 'स्कोप' नहीं था, आर्थिक समस्याएँ भी थीं इसलिए मजबूरन उन्हें मुम्बई आना पड़ा था। यहाँ आकर उन्हें संघर्ष तो करना पड़ा, लेकिन 'धर्मयुग' पत्रिका से बहुत मदद मिली। 'धर्मयुग' पत्रिका के सम्पादक धर्मवीर भारती जी ने आते ही उन्हें 'बैठे–ठाले' व्यंग्य–स्तम्भ लिखने को दे दिया। इस स्तम्भ (कॉलम) से लोगों में पहचान बढ़ी। और अखबारों में काम करना शुरू किया। इसके बाद फिल्में, दूरदर्शन, धारावाहिक, पत्र–पत्रिकाओं में काम मिलने लगा। शरद जोशी जी सन् 1975 ई0 में मुम्बई आये थे। मैं मुम्बई आई सन् 1983 ई0 में। जब मुम्बई में सारा परिवार इकठा हो गया, तब 'नवभारत टाइम्स' पत्रिका में 'प्रतिदिन' स्तम्भ शुरु हुआ, जो 'आखिरी दिन' (5 सितम्बर 1991 ई0) तक लिखा।''[1]

साहित्य–सम्पदा–'परिक्रमा' (1953), 'किसी बहाने' (1971), 'जीप पर सवार इल्लियाँ' (1971),'रहा किनारे बैठ'' (1972), 'तिलस्म' (1973), 'दूसरी सतह' (1978), 'पिछले दिनों' (1979), 'मेरी श्रेष्ठ व्यंग्य रचनाएँ' (1980), 'यथासम्भव' (1984), 'हम भ्रष्टन के भ्रष्ट हमारे' (1987), 'दो व्यंग्य नाटक' (1990), 'सरकार का जादू' (1993), 'मैं, मैं और केवल मैं' (1995) आदि कृतियाँ विशेष उल्लेखनीय हैं। इसके अतिरिक्त उन्होंने दूरदर्शन और फिल्मों से भी वे सम्बद्ध रहे। 'यह तो है। जिन्दगी', 'विक्रम और बेताल' जैसे दूरदर्शन धारावाहिक उन्होंने

लिखा था। 'चोरनी', 'छोटी सी बात', 'गोधूलि' जैसी फिल्मों में वे संवाद तथा पटकथाएँ लिखी हैं।

शरद जोशी जी के व्यंग्य की महत्वपूर्ण विशेषता उनकी कलात्मकता है। नये–नये शिल्प को लेकर जितने प्रयोग किये हैं, उतने कहीं नहीं मिलते हैं। वे प्रथम हिन्दी व्यंग्यकार हैं जो अमेरिकी व्यंग्यकार आर्ट बुखवाल्ड की सी ख्याति प्राप्त कर सके। उनकी यह विशेषता रही कि वे व्यंग्य के हजारों पाठक ही नहीं, हजारों श्रोता भी तैयार की। शरद जोशी की व्यंग्य–लेखों में समकालीन भारत की सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक तथा प्रशासनिक, सांस्कृतिक आदि क्षेत्रों में फैली हुई विकृतियों पर तीखा व्यंग्य प्रहार किया है। कांग्रेस पार्टी की कार्य शैली के संदर्भ में वे कहते हैं कि – ''तीस साल का इतिहास साक्षी है कि कांग्रेस ने हमेशा संतुलन की नीति को बनाए रखा। अहिंसा की नीति पर विश्वास किया और उस नीति को संतुलित किया लाठी और गोली से। समाजवाद की समर्थक रही, पर पूँजीवाद को शिकायत का मौका नहीं दिया। नारा दिया तो पूरा नहीं किया।''[2]

कथनी और करनी में अंतर रखने वाले राजनीतिक दलों से साधारण जनता भला कोई उम्मीद करे भी तो कैसे? समकालीन युग में यह प्रवृत्ति सभी राजनीतिक पार्टियों की कार्यशैली में शामिल है। स्वाधीन भारत में बहुत सालों तक कांग्रेस पार्टी का सत्ता रहा है जबकि कुछ समय तक जनता दल सरकार केन्द्र में रही। स्वातंत्र्योत्तर भारत की राजनीतिक आजादी से कुछ वर्षों पहले तक राष्ट्र की अंदरूनी मामले में, समाज में, राजनीति में, काफी उतार–चढ़ाव दिखने को मिला है। इसी संदर्भ में शरद जोशी कहते हैं कि – ''कहाँ पर नहीं खिल रहे हैं भ्रष्टाचार के फूल। जहाँ–जहाँ जाती है सरकार, उसके नियम, कानून, मंत्री, अमला, कारिन्दे। जहाँ–जहाँ जाती है सूरज की किरणें, वहीं–वहीं पनपता है, भ्रष्टाचार का पौधा।''[3]

शरद जोशी की व्यंग्य–लेखन के प्रति चिंता, आम आदमी की चेतना को सामाजिक आधार प्रदान करने में जुड़ी रही। आजादी के पश्चात् देश–विभाजन (1947), साम्प्रदायिक दंगे, गाँधी जी की हत्या (1948) शासनाध्यक्ष के रूप में नेहरू जी द्वारा अपनाई गई कमजोर आर्थिक नीति और विदेश नीति, नेहरू युग के बाद इंदिरा युग में घोषित आपातकाल (25 जून 1975) से होते हुए भारतीय राजनीति की राजीव गाँधी युग तक की यात्रा, बोफोर्स तोप घोटाला, सामाजिक अन्याय को अनदेखा नहीं किया। एक–एक त्रुटिपूर्ण नीतियों को बारीकी से विश्लेषण करते हैं। यही कारण है कि स्वातंत्र्योत्तर काल में लिखित उनका सम्पूर्ण व्यंग्य उनके जीवन का अभिन्नतम दस्तावेज बन जाता है।

शरद जोशी समकालीन युग की त्रुटिपूर्ण सामाजिक, राजनीतिक नीतियों पर तंज कसते हुए कहते हैं कि – ''फिर नेता ने इक्कीसवीं सदी के प्रवेश द्वार का फीता काटा। 'आइये भाइयों, सब शान्ति से आइये, एक–एक कर प्रवेश कीजिए। पहले नेता घुसा, फिर अफ्सर घुसे, फिर चमचे, भ्रष्टाचार, अनाचार, पाखण्ड, झूठ, फिर गरीबी, लाचारी, बीमारी एवं बेकारी घुसी, जब इक्कीसवीं सदी में प्रवेश करने लगे।''[4]

इस रूप में स्वाधीन भारत में दुर्नीतिग्रस्त की जड़ें गहराई तक समा गई, भ्रष्टाचार समकालीन युग में आम रिवाज बन गया है। जो प्रत्येक सरकारी कार्यालय में बगैर घूस दिए कोई कार्य होना सम्भव नहीं है।

जीप पर सवार इल्लियाँ' नामक व्यंग्य में शरद जोशी जी ने प्रशासनिक व्यवस्था की ओर संकेत किया है कि जिसके अन्तर्गत समकालीन युग में रक्षक (प्रशासनिक अधिकारी) स्वयं भक्षक बन गए हैं। उन्होंने व्यंग्य की जिस भाषा में प्रहार किया वह पाठक को विचलित कर देती है। खेत में फसल को इल्लियों द्वारा बर्बाद किया जा रहा है जिसकी जानकारी कृषि–विभाग को मिली। कृषि के आला अधिकारी कर्त्तव्य की प्रेरणा से प्रेरित होकर जीप पर सवार होकर इल्ली उन्मूलन अभियान की सफलता के लिए चने के खेत पर पहुंच गए। इस संदर्भ में व्यंग्यकार कहते हैं कि ''कुछ देर बाद हमलोग जीपों पर सवार होकर आगे बढ़ गए। किसान ने हमें जाते देखा तो राहत की साँस ली। जीप में काफी हरा चना ढेर पड़ा। मैं खाने लगा। वे लोग भी खाने लगे। एकाएक मुझे लगा कि जीप पर तीन इल्लियाँ सवार हैं जो खेतों की ओर चली जा रही हैं। तीन बड़ी–बड़ी इल्लियाँ, सिफ तीन ही नहीं, ऐसी हजारों, लाखों इल्लियाँ हैं जो सिफ चना ही खाती हैं बल्कि सब कुछ खा जाती हैं और निर्शक जीपों पर सवार चली जाती हैं।''[5] यह भक्षक प्राणी असाध्य है रक्तबीज की तरह अधिसंख्यक रूप से पैदा होकर विक्षोभ करने में सक्षम है। साधारण किसान की रक्षा इल्लियों से हो जाए, किन्तु इन जीप पर सवार इल्लियों से उनकी रक्षा कौन करेगा? यह सवाल अनुत्तरित ही रह जाती है।

व्यक्तियों का चारित्रिक पतन पर इंगित करते हुए व्यंग्यकार कहते हैं कि – ''अंत में वह स्वर्णिम घड़ी आई जब मुझे तीन फर्स्ट क्लास यानि डेढ़ सौ रुपये रखकर लिफाफा दिया गया। खर्च पचास, लाभ हुआ सौ। गाँधीवाद बुरा नहीं रहा। मैंने कहा चलेगा। लिफाफा जेब में रख लिया। उस क्षण आत्मा को घूँसा सा लगा। वह व्यंग्य में मेरा ही दिया गया भाषण दुहराने लगी। खासकर वे अंश जो मैंने चारित्रिक पतन को लेकर जरा–जरा सा लाभ के लिए गिर रहे मनुष्य के लिए कहा था।''[6] स्वातंत्र्योत्तर भारत में समकालीन यथार्थ यह है कि भ्रष्टाचार की जड़ें गहराई तक फैली हुई हैं। भ्रष्टाचार वस्तुतः शिष्टाचार बन गया है। इस तरह समाज के विविध विसंगतियों को अपने तीखे तेवर के साथ करारा व्यंग्य करते हैं किन्तु अमर्यादित भर्त्सना से दूर रखते हैं। ''चुनाव गीतिका : सरलार्थ'' व्यंग्यकार की एक सशक्त व्यंग्य कृति है चुनावी चक्र के समय राजनीतिज्ञों की मनोदशा तथा मतदान में विजयी होने के बाद चरित्र को व्यंग्य कथनों के जरिये स्पष्ट करने का सफल प्रयास में कहते हैं कि – ''अब वह क्रीड़ा भूमि (चुनाव मैदान) छोड़ जा रहा है। वह चुनाव जीत गया है और व्यर्थों के मोहों से उसने मुक्ति पा ली है। उसने जनता से किए अपने वादे यहीं की गंदी नालियों में फेंक दिए हैं। अपने नारों की स्मृति मात्र से वह ऊब जाता है। अब अपने पोस्टरों की ओर वह हँसकर उपेक्षा से अवलोकता है, उसके घोषणा–पत्र मार्ग में बिखरे हुए हैं जिन्हें रौंदता हुआ वह राजधानी लौट रहा है।[7]

लेखक शरद जोशी कहते हैं कि चुनाव तो चार दिन की चाँदनी होता है जिसमें जनता चाहे इतरा ले, मगर बाद में तो वही अंधकार होता है। समकालीन समय में चुनाव पद्धति ऐसा है कि जिस पत्तल में खाना, उसी में छेद करना। इस तरह समकालीन युग में, भारतीय लोकतंत्र में, चुनाव पद्धति में, अनेक तरीकों से अनाचार, दूराचार, भ्रष्टाचार और अत्याचार होता है।

सामाजिक स्थिति की विषमताओं और विकृतियों के विरूद्ध अपने क्षोभ को व्यंग्यकार नयी मानवता के स्वागत हेतु व्यंग्य के रूप में व्यक्त करते हुए कहते हैं कि – ''हम भी जाति के लड़कों को नौकरियाँ दिलवाने, तबादले रूकवाने, लाभ दिलवाने में मदद करते और इस तरह जाति की उन्नति और विकास में योगदान देते। आज हमारी जाति के लोग बड़े–बड़े पदों पर बैठे हैं और हमारी आभारी हैं कि हमने उन्हें देश सेवा का अवसर दिया। मैंने लड़कों से कह दिया, एम.ए. करके आओ चाहे थर्ड डिवीजन में ही सही, सबको लेक्चरार बनवा दूँगा। अपनी जाति बुद्धिमान व्यक्तियों की जाति होनी चाहिए और भैया चुनाव क्षेत्र में जाति के घर सबसे ज्यादा है। सब सॉलिड वोट हैं सो उनका ध्यान रखना पड़ता है। ये दुनिया जानती है हम जातिवाद के खिलाफ हैं।''[8]

शरद जोशी ने नेताओं, मंत्रियों के चारित्रिक पतन, बेरोजगारी, गरीबी आदि सामाजिक विद्रूपताओं को व्यंग्यात्मक भाषा में स्पष्ट किया है। वे मानवीय मूल्यों का तत्वान्वेषी होता है। व्यंग्य–लेखन उनका लक्ष्य नहीं माध्यम है, उनका उद्देश्य तो है मनुष्य तथा मानवीय मूल्य। इस तरह उन्होंने समकालीन युग की तमाम विकृतियों को व्यंग्य के माध्यम से अभिव्यक्त किया है।

इस तरह शरद जोशी की दृष्टि बराबर महत्वपूर्ण राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय सामाजिक तथा राजनीतिक घटनाक्रमों पर बनी रही। मुम्बई से प्रकाशित 'नवभारत टाइम्स' दैनिक समाचार पत्र में उनके नियमित दैनिक स्तम्भ 'प्रतिदिन' में छपने वाले आलेखों का संग्रह 'प्रतिदिन' (तीन खण्डों में) तो 1985 ई0 से लेकर 1991 ई0 तक के भारत के राष्ट्रीय जीवन में घटने वाली महत्वपूर्ण घटनाओं का दैनिक लेखा–जोखा विवरण ही नहीं बल्कि समकालीन युग का एक प्रमाणिक इतिहास तथा सामाजिक–राजनीतिक गतिविधियों का महत्वपूर्ण दस्तावेज है। इस संदर्भ में प्रसिद्ध व्यंग्यकार ज्ञान चतुर्वेदी कहते हैं कि '''श्री गणेशाय' से शुरू करके 'पानी की समस्या' तक जीवन के इतने रंग बिखरे हैं 'प्रतिदिन' में कि महाभारत वाला मामला बन गया है कि जो कहीं भी है, वह 'प्रतिदिन' में होगा ही और जो 'प्रतिदिन' में नहीं है, वह शायद कहीं है ही नहीं।''[9]

अपने कॉलम (स्तम्भ) के लिए आपातकाल (इमरजेंसी) अफसरशाही, मंत्री, मंत्रीपुत्र, भ्रष्ट राजनीति आयोग, आई.ए.एस. अफसर, राजनेताओं का चिंतन के नाम ऐय्याशी, पुलिस विभाग, देश की समस्या, सांस्कृतिक गतिविधियाँ, मुख्यमंत्री, प्रधानमंत्री, लोकायुक्त, राजनीतिक दलों का बिखराव, इंदिरा गाँधी, मोरारजी देसाई, अटलबिहारी वाजपेयी, जय प्रकाश नारायण, राम मनोहर लोहिया, ए.आर. अंतुले आदि को व्यंग्य का विषय बनाया गया।

शरद जोशी जी के प्रशंसकों में एक ज्ञानी जैल सिंह जी (भूतपूर्व राष्ट्रपति) थे जो 'नवभारत टाइम्स' दैनिक समाचार पत्र में उनके नियमित दैनिक कॉलम में छपने वाले 'प्रतिदिन' कॉलम (स्तम्भ) के बारे में अक्सर शरद जोशी जी को सुबह–सुबह ही फोन पर उस विषय पर विस्तार से चर्चा करते थे। भूतपूर्व राष्ट्रपति डॉ0 शंकरदयाल शर्मा जी उनके सन्दर्भ में कहते हैं कि – ''शरद जोशी को मैं एक अत्यन्त संवेदनशील रचनाकार मानता हूँ, अपने समय की सामाजिक–राजनीतिक और सांस्कृतिक विसंगतियों को उन्होंने अत्यन्त पैनी निगाह से देखा और उसे अत्यन्त सटीक शब्दों में व्यक्त किया।''[10]

शरद जोशी का व्यंग्य–लेखन में विद्यमान भारतीय समाज में क्रांतिकारी परिवर्तन लाने के लिए संस्कार और प्रेरणा देता है और उनके व्यंग्य–लेखन में वैज्ञानिक दृष्टिकोण से शक्ति भी मिलता है। उनका व्यंग्य–लेखन उनके जनवादी व्यक्तित्व का ही विस्तार है जो उनकी समकालीन यथार्थ एवं जनवादी चेतना को प्रमाणित करता है।

शरद जोशी महान व्यंग्यकार हैं। उन्होंने अपने व्यंग्य–लेखन के द्वारा राजनीतिक क्षेत्र को लक्ष्य बनाया है। उन्होंने स्वातंत्र्योत्तर युग के पश्चात आये हुए विकृति को देखा है तथा सन् 1941 ई0 से लेकर सन् 1990 तक की भारतीय राजनीति की मूल्यहीन प्रवृत्तियों के प्रति गम्भीर लेखनी चलायी है। उनके सम्बन्ध में डॉ0 स्मिता चिपलूणकर जी कहती हैं कि – ''शरद जोशी के व्यंग्य साहित्य को देखकर एक बात का स्पष्ट ही अनुभव होता है कि विविध क्षेत्रों में व्याप्त दोषों को वे केवल देखते नहीं, उनका पूरा परिचय भी प्राप्त कर लेते हैं। राजनीति, नेता, सरकारी कर्मचारी, प्रशासन, शिक्षा, वैभव हर एक का समाज के लिये विशेष महत्त्व है पर इनका जब अनुचित कार्यों के लिए उपयोग होने लगता है तो विसंगतियों अपने आप आ जाता है।''[11]

श्री शरद जोशी जी ने जीवन मूल्यों के विघटन के मूल में विद्रूप राजनीति को काफी करीब से देखे हैं। मूलतः मूल्यों की गिरावट, अवसरवादिता, सुविधावादी, अधर्म चरित्र इत्यादि राजनीति के बादलों से जिन्दगी के दूसरे क्षेत्रों पर कूटनीति, भ्रष्टाचार, विसंगति, अत्याचार, दूराचार, कदाचार की वर्षा हो रही है। भारतीय राजनीति में नैतिकता का स्थिति काफी गिर गयी थी। राजनीति का केन्द्र बिन्दु राजनेता है जो बहुरूपिये हो गये हैं। इस संदर्भ में डॉ0 माधव सोनटक्के कहते हैं कि – ''राजनीतिक छोटी सी घटना भी समूचे समाज पर अपना प्रभाव डालती है। और अगर राजनीतिक परिवेश विषमता, पाखण्ड और विसंगतियों से भरा हो तो पूरा समाज जीवन प्रवंचना और यातनाओं से आक्रान्त हो जाता है। तब साहित्य का धर्म होता है कि वह राजनैतिक विसंगतियों से जूझे।''[12]

इस तरह वर्तमान युग राजनीति का युग है। आज राजनीति समाज का महत्वपूर्ण हिस्सा बन गयी है। मानव जीवन के प्रत्येक क्षेत्र पर राजनीति का गहरा प्रभाव पड़ता है। आज का नेता सिद्धान्त विहिन तथा दल–बदलू बन गया है। वे अपने ही दल में गुट–निर्माण करके दल प्रमुख पर अपना प्रभाव डालने के लिए विभिन्न तरह के हथकण्डे अपनाते रहते हैं। गुटबंदी की राजनीति में निजी

स्वार्थ से राजगद्दी प्राप्ति हेतु छल, कपट, पदलोलुपता, भ्रष्टाचार, घूस, अनैतिकता आदि चरित्रों से राष्ट्र के सामने गम्भीर परिस्थितियाँ उत्पन्न हो गई है। स्वातंत्र्योत्तर युग में राजनेताओं ने देश को आर्थिक विपिन्नता में ढकेलकर जन–कल्याणार्थ बनी सारी सरकारी योजनाओं से सम्पत्ति लूटने का सहज मार्ग खोज लिया है। शरद जोशी जी अपने व्यंग्य–लेखन के माध्यम से राजनीतिक मूल्यों के ह्रास का मार्मिक ढंग से चित्रांकन किया है।। अतः इस अध्याय में उनका विवेचन–विश्लेषण प्रस्तुत किया जा रहा है।

सन् 1947 ई0 में हिन्दुस्तान को आजादी मिली। इसी दिन से भारत संसार का सबसे बड़ा लोकतांत्रिक देश बन गया। आजादी के दौरान वरिष्ठ राजनेताओं में महात्मा गाँधी तक ने आम जनता को आश्वस्त किया था कि स्वराज्य में अपना राज्य होगा। किसी तरह का आतंक और डर का नामोनिशान न होगा। उसमें कोई गरीब और निर्धन नहीं होगा और न ही भूखा। चारों ओर आनन्द एवं अमन–चैन होगा। आत्म निर्णय का प्रथम अधिकार कई वर्षों के पश्चात् जनमानस को प्राप्त हुआ। राजनैतिक आजादी, प्रजातांत्रिक शासन–व्यवस्था, प्रगति की अनन्त इच्छाएँ एवं आकांक्षाएँ भारतीय मन में आवेश तथा उत्साह की भावनाएँ भरने लगीं। राष्ट्र का शीघ्र ही नया संविधान निर्माण हुआ। इसके बाद सन् 1952 ई0 में पहला हिन्दुस्तान का आम चुनाव हुआ। अपने ही भाई–बान्धव को मतदान देकर राजसत्ता चलाने के लिए चयन किया गया। आम जनता की सामाजिक एवं आर्थिक परिस्थिति को सुदृढ़ करने के लिए पंचवर्षीय योजनाएँ बनीं। देश में समाजवाद की उद्घोषणा की गयी। किन्तु शनैः–शनैः जनमानस के सामने भयावह स्थिति दिखाई देने लगा। देश की परिस्थितियों के परिवर्तन का स्वरूप बदलने लगा। आजाद भारत का उद्देश्य था, वर्गविहीन, शोषणमुक्त, समाजवादी राष्ट्र की स्थापना करने का, परन्तु समाजवाद के नाम पर पूँजीवाद का फैलना, पुराने जमींदार ही देश के राजनेता बन गए। गाँव हो, झुग्गी बस्ती हो, शहर हो, कस्बा हो, हर जगह राजनीति के अखाड़े बन गए।

स्वयं शरद जोशी जी 'नवभारत टाइम्स', 'प्रतिदिन स्तम्भ', 13 मई 1985 में 'कांग्रेस क्या नहीं' में कहते हैं – ''स्वाधीन भारत राजनीति से नहीं, पॉलिटिक्स से चलता है। 'पॉलिटिक्स' जो इस 'शस्य श्यामला' भूमि एवं 'सोने की चिड़ियाँ' देश को कंगाल बनाने, चूसने के उद्देश्य से ही इस देश में आई। भारतीय राजनीति एवं विदेशी 'पॉलिटिक्स' का बदमूल अन्तर सर्वविदित है। 'पॉलिटिक्स' के मूल में टुच्चे स्वार्थ एवं संकीर्ण मान्यताएँ ही हैं। पिछले पचास वर्षों से हम इसी टुच्ची 'पॉलिटिक्स' को प्रश्रय देते हुए टुच्चेपन को अपनी पहचान बनाए हैं। 'नई पहचान' कायम करने के प्रयास में हमने अपनी विराटता को मिटाया है। मौलिकता का ह्रास किया है और आज राष्ट्र क्षेत्रीयता, साम्प्रदायवाद जैसे समस्याओं में सुलग रहा है। अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर व्यापक मुहिम छेड़नेवाली कांग्रेस आज विवादों के कटघरे में आबद्ध है। सम्पूर्ण राष्ट्र के लिए चेतना का मंत्र फूँकने वाली यह कांग्रेस आज विरोधी राजनीतिज्ञों की ही नहीं, सूधी व्यंग्यकारों की भर्त्सना की भी शिकार है। विघटनकारी तत्व स्वयं उसके भीतर मौजूद है जिनका हिमालय ऊँचे सिद्धान्तों में जमता है निजी स्वार्थों में पिघलता है, जिससे उतरने का सुख चढ़ने से अधिक है, अक्सर सभी उतरते नजर आते हैं।''[13]

इस प्रकार शरद जोशी तत्कालीन राजनीति व्यवस्था पर करारा व्यंग्य प्रहार करते हैं। आज के राजनेता सिद्धान्तहीन, अनैतिकता, मूल्यहीनता से ग्रस्त है। स्वच्छ, नैतिकता, मूल्य, ईमान सब इस राजनीति से समाप्त हो चुके हैं। राजनीतिक मूल्य का ह्रास हो चुका है। जिस राजनीति को महात्मा गाँधी जी अहिंसा, सत्य, सेवा, धर्म एवं त्याग से सम्बन्ध स्थापित किया था, वह गाँधी कि मृत्यु के साथ ही गायब हो गया है। इस तरह भारतीय लोकतंत्र के इतिहास में यह विचित्र विद्रूपता रही है कि जिस नेहरू के नेतृत्व में प्रजातांत्रिक प्रणाली ने ठोस संस्थाबद्ध स्वरूप ग्रहण किया। उसी के महत्वाकांक्षी एवं करिश्माई व्यक्तित्व के कारण संस्थाबद्ध चरित्र की अवहेलना करने वाली व्यक्तिवाद राजनीति को बढ़ावा मिलने लगा। इस तरह प्रजातांत्रिक व्यवस्था के माध्यम से पनपने और बढ़ने वाले कार्यकर्ताओं के स्थान सत्ताधारी राजनेताओं के ईर्द–गिर्द चक्कर लगाने वाले सत्तालोलुप चापलूस नेताओं का उत्कर्ष हुआ।

भारतीय लोकतंत्र में हर पाँच वर्ष के पश्चात एक बार चुनाव का पर्व आयोजित किया जाता है। यह संसदीय लोकतंत्र का पर्व होता है सार्वजनिक चुनाव। लोकसभा हो या विधानसभा, सबके मतदान पाँच सालों की कालावधि के पश्चात आयोजित किया जाता है। चुनाव में खड़ा हुआ जन–प्रतिनिधि बेहद विनम्र एवं हँसमुख दिखाई देता है। मतदान के दौरान राजनेता अपनी विशिष्ट स्वभाव को अपने घर में त्यागकर बाहर निकलता है और मतदान माँगते हुए साधारण जनता के बीच साधारण नागरिक की तरह पेश आता है। 'चुनाव में खड़ा आदमी' नामक लेख में शरद जोशी ने आज के नेताओं पर करारा व्यंग्य करते हुए कहते हैं कि – ''आज नेता महोदय ने पुराना कुर्ता निकालकर पहना। उसे कुर्ते का पुराना होना अखरा नहीं। आज उन्होंने एक घिसी हुई, फटी हुई चप्पल पहनी। उन्होंने अपने फूले हुए पैर को चप्पलों में फँसा दिए और अपने चुनाव क्षेत्र के लिए वे घर से निकले। आज वे कार में नहीं बैठे। कार खड़ी रही, मगर वे नहीं बैठे। आज वे जनता के बीच पैदल चले। जनता को अपने आस–पास से हटाने के लिए उन्होंने किसी पुलिसवाले की मदद नहीं ली। आज वे भीड़ में घिरे रहे। आज उन्होंने जनता की ओर ऐसे देखा जैसे हरी घास की ओर गधा देखता है।''[14]

इस प्रकार देश के लोकतंत्र की प्रवृत्तियों तथा प्रक्रियाओं के चलते एक ऐसी विशिष्ट राजनीतिक चेतना का ताना–बाना बन गया है जिसमें भ्रष्ट राजनेताओं की सुविधावादी राजनीतिज्ञों द्वारा प्रजातांत्रिक प्रणाली की संस्थाओं एवं प्रक्रियाओं को शक्तिहीन बनाकर संसद तथा विधान सभाओं को अपनी स्वार्थ तथा विशेषाधिकार का अखाड़ा बनाया गया। संसदीय लोकतंत्र की सफलता के लिए राजनेताओं की भूमिका तथा चरित्र का बड़ा महत्व होता है। संसद के भीतर तथा संसद के बाहर राजनेताओं के आचरण से संसद की गरिमा को खण्डित कर दिया है।

इस तरह शरद जोशी ने राजनीतिक व्यंग्य–लेखन में मिथकों का सहारा लेते हैं। 'जंबूद्वीप में चुनाव' नामक व्यंग्य–लेख में वर्तमान समय के लोक–सभा चुनावों त्रुटिपूर्ण स्थिति पर व्यंग्य–प्रहार करते हुए कहते हैं कि – ''अब कहाँ रहे वे लोग, न वैसे वोटर, न वैसे नेता। अब तो जो छँटा हुआ धूर्त होता है वही जाता है दिल्ली। गुजर गया वह जमाना भैया, क्या प्रजातंत्र होता था उस समय में। खैर छोड़ो, आज की सोचो। ये ससुरे खड़े हो गए हैं, इनमें एक भी है वोट के काबिल।''[15] भारतीय प्रजातांत्रिक व्यवस्था में नियम के तहत यह प्रावधान अवश्य है कि आम जनता किसी जन–प्रतिनिधि नेता को मतदान कर नकार सकती हैं परन्तु व्यवहारिक तौर पर ऐसी व्यवस्था हो नहीं पाती। यह इसलिए नहीं हो पाता है कि चुनावी राजनीति में राजनेताओं द्वारा साम, दाम, दण्ड, भेद इत्यादि सभी रणनीतियों का प्रयोग किया जाता है।

लोकतत्र में सत्ता का स्रोत आम नागरिक नहीं राजनेतागण एवं पूँजीपति वर्ग है। इस तरह वर्तमान संदर्भों में राजनेताओं का चरित्र ही व्यंग्य का आलम बन गया है। सत्ता पक्ष हो या विपक्ष के नेता, मंत्री सभी, उनके त्रुटिपूर्ण स्वभाव के कारण व्यंग्य वाणों के शिकार बने हैं। नेता के शरीर के भूगोल के नाप के साथ उनका बुद्धि परीक्षण, साधारण ज्ञान, उसके क्रिया–कलाप एवं छल–कपट सभी पर व्यंग्यकारों की पैनी नजर रही है। आम जनता की समस्याएँ जैसे–जैसे वृद्धि हुई है वैसे–वैसे नेताओं की स्थूल काया का विस्तार भी होता रहा है एवं आम जनता के लिए प्रजातंत्र में कोई स्थान नहीं बचा है। चुनाव, मतदान आदि सब कुछ दिखावा है।

भ्रष्ट राजनेताओं द्वारा इतना झूठ बोला जाने लगा कि झूठ एवं सत्य की बीच की सीमा रेखा ही गायब होती जा रही है। 'सरकार का जादू' नामक व्यंग्य–लेख में शरद जोशी ने लोकतंत्र में आम जनता की दयनीय स्थिति पर वर्णन किये हैं।

इस प्रकार भ्रष्ट नेताओं के रहते राष्ट्र की आम जनता की स्थिति में कोई बदलाव आनेवाला नहीं है। लेखक भ्रष्टनेताओं की इस संस्कृति विहीनता से क्षुब्ध थे। 'चुनाव : एक मुर्गाबीती' व्यंग्य लेख में लेखक नेताओं की स्वार्थपूर्ण मनोवृति पर करारा चोट करते हैं। वर्तमान समय के नेता जिस थाली में खाना खाते हैं, उसी थाली में छेद करते हैं। स्वार्थी नेताओं को केवल पद प्राप्त करने की इच्छा होती है। यदि कोई नेता मुर्गी चुनाव चिन्ह लेखक खड़ा होता है और वह विजयी होता है तो कुछ देर बाद वह उस मुर्गी का मशालेदार इलेक्शन कर उसे भी खा जाता है। जिस व्यक्ति के मतों से वह विजयी होता है उसे उनकी चिन्ता नहीं रहती।

''साँझ हो गयी। मुर्गा–मुर्गी अपने दड़बे के पास आ गए। मर्गा हैरान था अभी तक और मुर्गी कह रही थी भगवान का शुक्र है। तभी वह भोंड़ी शक्ल वाला खानसामा आया और मुर्गे को टाँगों से पकड़ उल्टा लटकाकर जागीरदार साहब के पिछवाड़े की ओर ले गया।

मुर्गी पीछे भागी। मुर्गा चिल्लाया क्या यही वोट है? क्या कर रहे हैं? क्या कर रहे हैं? किसी ने नहीं सुना। रात तक उसका मसालेदार इलेक्शन कर दिया और सजाकर प्लेटों में रख दिया। सारी रात मुर्गी रोती रही और वोट को गाली देती रही।''[16]

शरद जोशी जी ने आजादी के बाद लोकतंत्र की छाया में होने वाले मतदानों एवं उसकी विद्रूपताओं को बड़ी सूक्ष्मता के साथ देखें और परखे हैं। भारत की लोकतांत्रिक शासन–व्यवस्था में मतदान का अत्यधिक महत्त्व है। चुनाव–प्रणाली लोकतंत्र व्यवस्था की अनिवार्य शर्त है और प्रजातंत्र की वास्तविक प्राणशक्ति मतदान को माना जाता है। इसके बिना प्रजातांत्रिक व्यवस्था की कल्पना भी नहीं की जा सकती है। प्रजातंत्र में शासन व्यवस्था चलाने के लिए आम नागरिक मतदान द्वारा अपने जन–प्रतिनिधियों का चयन करते हैं। अर्थात् मतदान ही प्रजातांत्रिक सरकार की स्थापना की महत्त्वपूर्ण पद्धति है। इस तरह प्रजातांत्रिक व्यवस्था में चुनाव प्रक्रिया में विसंगतियाँ देखने को मिलती है। सैद्धान्तिक आधार पर मतदान न होकर चुनाव प्रक्रिया में विद्रूपता आ गई है। इन्हीं विद्रूपताओं एवं विसंगतियों को देखकर 'चुनाव प्रक्रिया' पर बहुत ही चूभते हुए व्यंग्य प्रहार शरद जोशी जी ने अपने व्यंग्य लेखन में किये हैं। 'बूथ पर कब्जा' नामक व्यंग्य–लेख में कहते हैं कि – ''जिस सड़ी–गली और भ्रष्ट व्यवस्था में हम प्रजातांत्रिक बने साँस ले रहे हैं उसका निम्नतम बिन्दु वह मतदान केन्द्र है, जहाँ अनैतिकता सारे कपड़े उतार नृत्य करती है .... बूथ कप्चरिंग एक रोजगार है जो चुनाव के मौसम में कुछ लोगों को कुछ दिनों के लिए मिल जाता है। चुनाव का मजाक बनाने के लिए या किसी उम्मीदवार के वोट कम करने के लिए जिस तरह कई–कई निर्दलीय यह जानते हुए भी कि वे चुनाव में हारेंगे, चुनाव में खड़े हो, केवल मतपत्र का आकार बढ़ाने के सिवाय विशेष योगदान नहीं कर पाते।..... शरीफ भले लोग केन्द्रों पर नहीं आते, क्योंकि हिस्सा और बूथ कप्चरिंग की बातें एडवांस में फैला दी जाती है।''[17]

इसी तरह 'कुर्सी ही देश, कुर्सी ही क्षेत्र' नामक व्यंग्य में व्यंग्यकार शरद जोशी जी 'चुनाव–प्रणाली' पर तीखा प्रहार करते हुए कहते हैं कि – ''कुर्सी की रक्षा की खातिर कहा जाता है कि चुनाव कराना देश के हित में नहीं है और कुर्सी पाने के लिए कहा जाता है कि फौरन चुनाव कराया जाना आवश्यक है। कुर्सी को जाने से रोकना और उस तक पहुँचने की जल्दीबाजी ही राष्ट्र धर्म है।। सब त्यागी, सिद्धान्तवादी और महान राष्ट्रपति और गवर्नर से अपनी कुर्सी के हित में बात करने के लिए मिलते हैं। संविधान का लक्ष्य कुर्सियाँ उत्पन्न करना और उसकी रक्षा करना है। भारतीय संविधान भारत के लिए नहीं, भारत के नेताओं के लिए बना है। लोकसभा हो या विधान सभा, जब चाहा कुर्सी के हित में भंग कर दी। कुर्सी दूसरी को जाती देख राष्ट्रपति शासन की माँग करने लगे। लोकसभा भंग की, अपनी कुर्सी बचा ली। विधानसभा भंग की, अपनी कुर्सी बचा ली। समझौतों से बचाई, साझे से बचाई, तालमेल से बचाई, पर कुर्सी बचाई। पार्टी डूबने दी, राज्य डूबने दिए, देश डूबने दिया। कुर्सी निकालकर ले गये। कुर्सी बच गयी तो सब बच गया।''[18]

राजनीतिक पार्टी किसी राज्य में रहनेवाले आम नागरिकों के उस सुसंगठित समूहों को कहते हैं जिसका राजनीतिक विचारधारा का उद्देश्य एक समान हो। जो इस समान विचारधारा रूपी उद्देश्य की प्राप्ति के लिए अमन–चैन एवं वैध संसाधनों का उपयोग हो। ये राजनीतिक दल लोकतंत्र की आधारशिला है। जिस पर लोकतंत्र की इमारत खड़ी होती है। इस व्यव्सथा में गणतांत्रिक पद्धति में राजनीतिक पार्टी का विशेष मूल्य होता है। अतः प्रजातांत्रिक शासन–व्यवस्था को दलीय शासन–व्यवस्था भी कहा जाता है। इसका उल्लेख संविधान में न होने के कारण इसे ब्रह्म संवैधानिक रूप माना जाता है। जो पूरे विश्व के लगभग समस्त राष्ट्रों में पाये जाते हैं। हिन्दुस्तान में इस तरह के राजनीतिक पार्टियों का उदय 20 वीं शती के प्रथम दशक से माना जा सकता है। स्वातंत्र्योत्तर काल में हिन्दुस्तान में कांग्रेस, साम्यवादी दल, भारतीय जनता पार्टी, जनता दल, इसके अलावा शिवसेना पार्टी, समाजवादी पार्टी, सोसलिस्ट पार्टी, कम्युनिष्ठ दल आदि अनेक नये क्षेत्रीय राजनीतिक दल उभर कर सामने आये। इन सब दलों की विचारधाराहीन, सिद्धान्तहीन, विसंगतिपूर्ण कार्य, दल–बदलू पूर्ण कार्यों के आधार पर व्यंग्य को विकसित होने का कार्य प्रशस्त किया। शरद जोशी ने स्वातंत्र्योत्तर हिन्दुस्तान की राजनीतिक दलों का लेखा–जोखा प्रस्तुत किए हैं। वे कहते हैं कि – ''भारतीय प्रजातंत्र राजनीतिक पार्टियों का कॉलेज हो गया है। सब गड़बड़ हो रहे हैं, सब मिल रहे हैं, सब चस्का एक साथ आ रहा है। एक वो हाथ में ले प्रजातंत्र में पार्टी तलाशना, पार्टी में राजनीति तलाशना और राजनीति में विचार तलाशना सामान्य जन के लिए अत्यन्त कठिन हो गया है। व्यक्तिवाचक संज्ञाओं की एक कूड़ेदानी हो गयी है प्रजातांत्रिक राजनीति।''[19]

'कहाँ–कहाँ से गुजर गया समाजवाद' नामक व्यंग्य लेख में शरद जोशी जी ने भारतीय राजनीतिक दलों पर तीखा व्यंग्य प्रहार करते हुए कहते हैं कि – ''हमारे देश में समाजवाद बड़ा बहुरूपिया है पता नहीं कितने रूप, कितने आकार, कितने रंग बदलता है। जब जिसने चाहा, समाज को वैसा परिभाषित कर दिया। बड़ा लावारिस जीवन बिताया है। भारती में समाजवाद ने। अवाड़ी अधिवेशन में जो समाजवादी ढाँचे की समाज–रचना के मुहावरे के साथ कांग्रेस में घुसा और लटककर रह गया। इधर लोहिया के चिंतन मनन से उपजा एक तेज तर्रार समाजवाद था, जो कालान्तर में उदार समझौते की संयुक्त विधायक दल सरकारें बना आहत हो देखता रह गया। लोहिया ने इसे चबूतरा या प्लेटफार्म बनाया तो इन्दिरा ने इसे खींचकर कांग्रेस का बना दिया।''[20]

''भाजपा छोटा सा जोखिम मोल नहीं लेती। उसे पालकी न मिले, पर वह पवित्र ब्राह्मण की तरह अपने कपड़े बचाती अदर पदर जनपथ से निकल सत्ता तक पहुँचना चाहती है ... भाजपा बड़ी दिलचस्प पार्टी है जिसकी सीमित भूगोल में बड़ी गहरी जड़ें हैं, पर इसकी आज तक फुनगी न हुई, क्योंकि आँधी तूफान की आहट मिलते ही ये डालें समेट दुबकने लगती है। अपने लाभ की ही सोचने वाले चतुर व्यापारी है भाजपा। इसमें आप क्या आलोचना करेंगे कि वे केवल अपनी सोचते हैं।''[21]

''एक मामले में जनता पार्टी बड़ी ठोस नतीजे पर पहुँची। उसने देखा कि एकता न रखना पार्टी पर सबसे बड़ा कलंक है। अतः एकता बनाओ। वे कांग्रेस का मुँह चिढ़ाने के लिए एकता की सोचने लगे। यह काम कठिन था। वैचारिक और नीतिगत संतुलन के तराजू के पल्ले पर आकांक्षी मेढ़कों को एक साथ बिठाये रखना अपने में कम काम नहीं, जबकि तराजू पकड़ने वाले भी प्रकृति से मेढ़क हो। जनता पार्टीवाले इस नतीजे पर पहुँचे कि कुछ भी काम करने से तराजू हिलने का खतरा है। अर्थात् एकता भंग होती है। अतः उचित यह है कि कुछ भी करो, ताकि तराजू जस का तस रहे। तब से कमाल है कि एकता बनी हुई है और काम कुछ नहीं हो रहा है।''[22]

जनता दल देश में आपातकालीन 1975 से सताये हुए गैर वामपंथी पार्टियों का एक ऐसा साझा मंच था जो अपनी राजनीतिक विचारधाराओं को भुलाकर कांग्रेस को हराने के लिए एक साथ मिलकर एकसूत्रीय कार्यक्रम पर एकत्रित हुए थे। कुर्सी प्राप्ति के एकमात्र लक्ष्य के लिए गठजोड़ था जिसमें न तो उसकी कोई सुस्पष्ट राजनीतिक विचारधारा बन पायी और न ही उसकी राजनीति की कोई दिशा निकल पायी।

इस तरह व्यंग्यकार शरद जोशी भारतीय राजनीतिक दलों विसंगतिपूर्ण स्थितियों पर करारा व्यंग्य किये हैं। अवसरवादी और सुविधावादी पार्टियों से मिलकर बनी खिचड़ी दल कल्याण योजना तथा विकास के कार्यक्रम के अभाव में आम जनता का कोई भलाई नहीं कर पायी। भारतीय राजनीतिक दलों की सिद्धान्तहीनता और विचारधारा शून्यता की बहुत बड़ी विडम्बना ही है।

युगीन भारतीय समाज एवं राजनीति अफसरशाही के हाथों शोषण और भ्रष्टाचार करता है। कार्यालयों में समस्या यह है कि कोई भी काम रिश्वत तथा सिफारिश के बिना पूरा होना असम्भव नहीं, कठिन अवश्य हो गया है। सरकारी नौकरशाही एवं राजनेताओं का मिली भगत से आम जनता पीड़ित हैं। शरद जोशी का ''जीप पर सवार इल्लियाँ'' नामक व्यंग्य लेख में प्रशासन के भ्रष्ट चरित्र को बड़ी सहजता से प्रहार करते हैं। यह व्यंग्य लेख कृषि तथा कृषक की परिस्थितियों के प्रति हमारे प्रशासकों और नौकरशाहों की अनभिज्ञता एवं उदासीनता पर तीखा प्रहार करते हुए कहते हैं कि – ''इस खेत से इल्लियाँ नहीं है? बड़े अफसर ने पूछा। जी नहीं है, छोटा अफसर बोला। कुतो नजर आ रही है, जी हाँ, कुछ तो हैं, कुछ तो हमेशा रहती है, खास नुकसान नहीं करती। फिर भी खतरा है। खतरा तो है .....किसान भागकर पास आया। छोटे अफ्सर ने उससे मुड़कर कहा – अबे, तेरे खेत में इल्ली है? नहीं है हुजूर। छोटे अफसर ने क्रोध से सारे खेत की ओर देखा और फिर बोला – अच्छा, खैर जरा हरा चना छाँटकर साहब की जीप में रखवा दे। चल जरा जल्दी कर। कुछ देर बाद लोग जीपों पर सरवार हो आगे बढ़ गये। किसान ने हमें राहत की साँस ली। जीप में काफी हरा चना ढेर पड़ा था। मैं खाने लगा। वे लोग भी खाने लगे। एकाएक मुझे लगा कि जीप पर रतीन

इल्लियाँ सवार हैं, सिफ तीन ही नहीं, ऐसी हजारों इल्लियाँ हैं, लाखों इल्लियाँ, ये सिर्फ चना ही खा रही, सब कुछ खाती हैं और निरशंक जीवों पर सवार चली जा रही हैं।''[23] इन संवादों में हाँ में हाँ मिलाने की चापलूसी कल्चर को देखा जा सकता है। युगीन राजनीति में लालफीताशाही, नौकरशाही, अफसरशाही ईमानदारी से अपने कर्त्तव्यों का पालन नहीं करता है। सत्ता स्वयं भी नौकरशाही के व्यापक प्रभाव क्षेत्र के कारण उससे मधुर सम्पक बनाए रखने में ही अपनी भलाई समझती है शरद जोशी जी की 'सरकारी की जादू' 'हम भ्रष्टन के भ्रष्ट हमारे', 'जीप सवार इल्लियाँ' आदि व्यंग्य–लेखों में प्रशासकीय कर्मचारियों 'करप्शन' का भंडाफोड़ किया है। शरद जोशी एक व्यंग्यकार थे तथा आजादी के पश्चात निरन्तर राजनीतिक से उद्विग्न थे। उन्होंने भ्रष्ट राजनीति के विभिन्न क्षेत्रों पर तीखा व्यंग्य प्रहार किये हैं।

अध्ययन का उद्देश्य

इस तरह उन्होंने तत्कालीन युग की परिस्थितियों से जूझते हैं। जीवन के आरम्भ से ही शरद जोशी पर संकटपूर्ण संघर्ष की परिस्थितियाँ छाई रही। उम्र के हर पड़ाव संघर्ष करते रहे। बाल्यकाल से रचना करते रहने के लिए संघर्ष शुरू हुआ, वह जीवन के हर मोड़ पर जारी रहा। चोरी छिपे वह छदम नाम से लेखन–कार्य को करते रहे।

उनकी पूरी जिन्दगी संघर्षमय रही है। उनके समक्ष बाल्यकाल से लेकर जीवन के अंत तक चुनौतियाँ खड़ी रहीं। वे समाज से संघर्ष करेक विजातीय शादी करने और सरकारी नौकरी करने तक संघर्ष करते रहे। इस प्रकार लेखन को चुना तथा वे लगातार लिखते रहे। वे बाल्यावस्था में जो राष्ट्रीय चेतना एवं साहित्यिक क्रिया–कलापों का माहौल था, वह संवेदनशील शरद जोशी को भीतर तक प्रभावित करता था। उज्जैन का वह माहौल शायद उसी समय से उनको व्यंग्यकार को गढ़ने लगा। इस प्रकार 50 वर्षों तक संघर्ष के दौरान किसी खास विचारधारा के जमावड़े में शामिल नहीं हुए।

शरद जोशी अपना मंतव्य स्पष्ट करते हुए वे कहते हैं कि ''नया परिवेश, नए अंतर्विरोध, नई दृष्टि की मॉग करते हैं। नयी टेक्नोलॉजी, नए विचार, नए अंतर्राष्ट्रीय षडयंत्र, राजनीति में बदलती प्रवृत्तियाँ, शासन का कुछ निश्चित हाथों में केन्द्रित होना, विरोधी दलों को नए से समझना, वैचारिक अन्तर्धारा को समझना, नई पीढ़ी में जो भाषा की समझ आ गई है। उसे समझकर लिखना ताकि ज्यादा से ज्यादा कम्युनिकेट करना सम्भव हो सके। एक किस्म की 'कॉन्सेस' पैदा हो। व्यंग्यकार की भूमिका समाज के मन के असंतोष के महसूस कर पाखण्ड और अन्याय को उजागर करना होता है।''[24]

इस प्रकार उन्होंने अपने लेखन के जरिये समाज एक देश में व्याप्त अन्यायों का डटकर विरोध किया। उन भ्रष्टचारी शक्तियों को नीडर होकर डटकर सामना किये, जो देश को गर्त में ले जाने की कोशिश कर रही थी। अपने सरकारी नौकरी के समय उनको सरकारी अधिकारियों, मंत्रियों के विरोध का सामना करना पड़ा। इस कथन के संदर्भ में वे स्वयं कहते हैं कि ''मुझे भोपाल के वे दिन याद हैं, जब मैं एक सरकारी अफसर से असहमत होने के कारण रातों–रात प्रतिक्रियावादी घोषित हो गया। फ्रांसिस्ट घोषित हो गया। दोपहर को हल्की सी बहस हुई और पाँच–साढ़े पाँच बजे से नारे उछलने लगे कि मैं प्रतिक्रियावादी हूँ जिसका पता मुझे सात बजे चला। अगली सुबह पता लगा कि मैं अच्छा व्यंग्य लेखक भी नहीं हूँ क्योंकि मेरे व्यंग्य में हास्य ज्यादा होता है।''[25]

इस प्रकार शरद जोशी को परेशान करने के लिए तरह–तरह हथकण्डे अपनाये गये। इस प्रकार के झंझावतों को झेलते हुए वे अंत तक यह निश्चय किये कि राजनीतिक एवं सामाजिक सरोकारों से युक्त जिन्दगी जीने के लिए स्वतंत्र रचना को अपनाया जाए। इस प्रकार उन्होंने सन् 1965 ई0 में सरकारी नौकर से त्यागपत्र दे दिया, उस समय वे तीन कन्याओं के पिता थे। वे शासन–विरोधी और व्यवस्था–विरोधी घोषित हो चुके थे। अपने आजीविका चलाने के उन्होंने पत्रकारिता को अपनाया। 'नई दुनिया', 'नवभारत–टाइम्स', 'धर्मयुग', 'साप्ताहिक हिन्दुस्तान', 'हिन्दी एक्सप्रेस' के लिए लिखते रहे। इसके पश्चात वे फिल्मों एवं दूरदर्शन के धारावाहिकों के भी रचनाकार बने। किन्तु दुर्भाग्य ने यहाँ पर भी उनका साथ नहीं दिया। उनसे जुड़ी हुई पत्रिकाओं को सरकारी कोपभाजन का शिकार होना पड़ा। वस्तुतः जीवन भर आर्थिक और मानसिक रूप से उनको परेशान किया जाए, जिससे उनको मनोबल टूट जाये लेकिन परिणाम इसका उल्टा निकला। वे अपने समय के कबीर थे जो भिन्न–भिन्न कुरीतियों से जिता सताया गया। उनका रचना उतना ही अधिक धारदार एवं पैनापन रूप से उभर कर सामने आया फिर भी झुकाया नहीं जा सका।

उनकी राजनीतिक सोच के संदर्भ में डॉ0 वागीश सारस्वत जी कहते हैं कि –''व्यंग्यकार शरद जोशी तो स्वयं एक सजग पत्रकार थे। शरद जोशी सामाजिक सरोकारों से गहरे जुड़े थे, साथ ही वे राजनीतिक हथकण्डों और राजनीतिक विडम्बना के प्रति जागरूक थे। स्तम्भकार होने के कारण शरद जोशी का साविका दैनंदिन राजनीतिक गतिविधियों से पड़ता था। शरद जोशी को अपने साहित्य के सृजन के लिए सर्वाधिक विषय राजनीतिक क्षेत्र से ही प्राप्त हुए। साहित्यकार भले ही किसी राजनीतिक दल का सक्रिय कार्यकर्ता न हो, किन्तु वह राजनीतिक परिणामों से उत्पन्न होने वाली जीवन की स्थितियों और विसंगितयों से गहराई से जुड़ा रहता है। परिस्थितियों के प्रभाव से रचनाकार राजनीतिक चिंतन के लिए भी प्रवृत होता है। इसका परिणाम स्वाभाविक तौर पर साहित्य में परिलक्षित होने लगता है। शरद जोशी के साहित्य में कभी समाज और जीवन के प्रतिबम्ब के साथ राजनीतिक प्रतिबिम्ब भी दिखाई देता है। पतनशीलता पर क्षोभ और आक्रोश उभरता है। शरद जोशी सामाजिक प्रतिबद्धता और मानवीय मूल्यों के अटूट रिश्ते को रेखांकित करने के लिए राजनीतिक स्थितियों पर व्यंग्य करते रहे। स्वाधीनता के बाद भारतीय चेतना में राजनीति ने गहरी पैठ बनाई है। सामाजिक जीवन में राजनीतिक प्रवृत्तियों का प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से जो भी प्रभाव पड़ा उसको शरद जोशी ने अपने साहित्य में गहरी समझ के साथ कलात्मक अभिव्यक्ति प्रदान की। वे किसी एक दल के लिए समर्पित या प्रतिबद्ध नहीं थे। वे जिस भी

राजनीतिक दल या राजनीतिक स्थिति या राजनीतिक व्यक्तित्व में कहीं कोई कमी देखते थे तो उस पर बिना किसी लिहाज के व्यंग्य प्रहार करते थे। वे भारतीय की विसंगतियों को अच्छी तरह पहचानते थे।''[26]

सन् 1941 से लेकर 1990 तक भारतीय राजनीति से लेकर अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति की। मूल्यहीन प्रवृत्ति के प्रति उन्होंने अपनी लेखनी चलाई है। वे स्वयं कहते हैं कि 'सन् इकतालीस से मैं साहित्य के फटे में अपनी टाँग फँसाये हूँ। फटा तब से फटा ही है और मेरी टाँग वहीं है।''[27]

उन्होंने अपने प्रहार से ब्रह्माण्ड (राष्ट्रीय अन्तर्राष्ट्रीय) को नहीं छोड़ा है। उनको जहाँ भी राजनीतिक सामाजिक विसंगतियाँ देखी, वहाँ उस विसंगति को व्यंग्य प्रहार के जरिये अभिव्यक्त किये हैं। राजनीति के मेघ से जीवन के विभिन्न क्षेत्रों पर भ्रष्टाचार, अन्याय, कदाचार, अत्याचार की वर्षा हो रही है। उन्होंने अपनी तीसरी नजर से भ्रष्ट राजनीति को अभिव्यक्त करने का चेष्टा किये हैं।

निष्कर्ष

शरद जोशी स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी साहित्य जगत के प्रतिष्ठित रचनाकार रहे हैं। उन्होंने तत्कालीन देश में व्याप्त राजनीतिक तथा सामाजिक, प्रशासनिक आदि अन्तर्विरोधों और विकृतियों से साक्षात्कार किया है। भ्रष्ठ राजनीतिज्ञों के क्रिया–व्यापार, आम जनता के टूटते–बिखरते मनसूबे, नेताओं की दल–बदल सिद्धान्तहीन प्रवृति, चुनाव–चक्र, प्रशासनिक भ्रष्टाचार तथा सार्वजनिक सेवाएँ (जिसमें रेलसेवा की विकृतियाँ तथा पुलिस तंत्र की चरित्रहीनता) आदि ने भारतीय आम जनताओं के हृदय को कबसे ठेस पहुँचाया है, इसकी सजीव प्रस्तुति शरद जोशी जी की व्यंग्य–लेखन में देखने को मिलता है। उनके व्यंग्य–लेखन का अधिकांश लेख राजनीतिक अन्तर्विरोधों तथा विद्रूपताओं से सम्बद्ध हैं। वे तत्कालीन युग के राजनीतिक यथार्थ को बहुत ही गम्भीर और गहरी समझ लेकर हमारे सामने जीवन्त प्रस्तुत किये हैं। इस प्रकार उनके राजनीतिक व्यंग्य मानव स्वतंत्रता के जनविरोधी शक्तियों के खिलाफ, प्रत्यक्ष तथा अप्रत्यक्ष उनकी मदद करेन वालों को लक्ष्य करके व्यंग्य प्रहार किये हैं जो उनकी गहरी राजनीतिक चेतना की उपज है।

समकालीन राजनीतिक व्यवस्था के जनविरोधी शक्तियों के खिलाफ जो कार्य उन्होंने किये एक निश्चित सामाजिक उद्देश्यता के कारण किया गया है। उनका उद्देश्य यही है कि तत्कालीन लोकतांत्रिक व्यवस्था में यदि राजनेता, शासक, प्रशासनिक अधिकारी अगर पाक–साफ हो जाए तो सम्पूर्ण व्यवस्था सुधर सकती है। इसी सुदृढ़ व्यवस्था हेतु वे राजनीतिक विकृतियों पर व्यंग्य आक्रमण करते रहे। इस तरह शरद जोशी जी का सम्पूर्ण व्यंग्य लेखन तत्कालीन भारतीय राजनीति तथा समाज में क्रांतिकारी परिवर्तन लाने के लिए संस्कार और प्रेरणा देता है। उनके व्यंग्य–रचनाएँ भ्रष्टाचार, निराशा, विकृत, सिद्धान्तहीन प्रवृतियों जैसे सम्पूर्ण नकारात्मक तथ्यों के खिलाफ 'सेंस ऑफ ह्यूमर' अर्थात् जिन्दादिली है। इस प्रकार उनका व्यंग्य लेखन घोर परिस्थितियों से जूझने का साहस तथा अस्त्र है। अपने मूल्यों, विश्वासों और आस्थाओं से जुड़े रहने का माध्यम है। इस रूप में उनके व्यंग्य लेखन मानव–मूल्यों पर हावी होती विकृतियों से संघर्षमय मुकाबला है। शाश्वत स्थितियों और सवालों का शाश्वत समाधान तथा विधान भी है।

इसलिए राजनीति तथा प्रशासनिक सम्बन्धी व्यंग्य–लेखन युगीन राजनीति यथार्थ का विश्लेषणात्मक दस्तावेज है। स्वातंत्र्योत्तर हिन्दुस्तान के राजनीतिक एवं सामाजिक रूप से यथार्थ का अभिन्नतम दस्तावेज है जिसमें शोषित मानवता के प्रति उनकी गम्भीर राजनीतिक चेतना तथा जन–विरोधी शक्तियों के खिलाफ करारा व्यंग्य प्रहार है। उनका व्यंग्य–लेखन गहरी राजनीतिक चेतना तथा गम्भीर सामाजिक चेतना को प्रमाणिक करता है। इस रूप में शरद जोशी का राजनीतिक व्यंग्य उन्हें सही अर्थों में एक प्रतिबद्ध व्यंग्यकार सिद्ध करता है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. *डब्ल्यू.डब्ल्यू.डब्ल्यू. शरदजोशी.को.इन*
2. *जादू की सरकार – शरद जोशी, राजपाल एण्ड सन्ज प्रकाशन, नई दिल्ली, संस्करण–2008,पृ0 सं0 43*
3. *यथासम्भव–शरद जोशी, भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन, नई दिल्ली, संस्करण–2009, पृ0 स0 23–24*
4. *जादू की सरकार – शरद जोशी, राजपाल एण्ड सन्ज प्रकाशन, नई दिल्ली, संस्करण–2008, पृ0 स0 36*
5. *जीप पर सवार इल्लियाँ – शरद जोशी, राजपाल एण्ड सन्ज प्रकाशन, नई दिल्ली, संस्करण–2011, पृ0 स0 32*
6. *एक मिनी भ्रष्टाचार – यथासम्भव, भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन, नई दिल्ली, संस्करण–2009, पृ0 स0 119*
7. *वोट ले, दरिया में डाल – शरद जोशी, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, संस्करण–2010, पृ0 स0 194*
8. *एक भूतपूर्व मंत्री से मुलाकात, जीप पर सवार इल्लियाँ – शरद जोशी, राजपाल एण्ड सन्ज प्रकाशन, नई दिल्ली, संस्करण–2011, पृ0 स0 77*
9. *प्रतिदिन – शरद जोशी, किताबघर प्रकाशन, नई दिल्ली, संस्करण–2011, पृ0 सं0 06*
10. *डब्ल्यू.डब्ल्यू.डब्ल्यू. शरदजोशी.को.इन*
11. *हिन्दी के व्यंग्यकार – डॉ0 स्मिता चिपलूणकर, अलका प्रकाशन,कानपुर,संस्करण–2004,पृ0 सं0 102*
12. *शरद जोशी के व्यंग्य साहित्य – डॉ0 सूर्यकान्त शिन्दे, पूजा पब्लिकेशन, कानपुर, संस्करण–2011, पृ0 सं0 78*
13. *प्रतिदिन (भाग – एक), शरद जोशी – किताबघर प्रकाशन, नई दिल्ली, संस्करण–2010, पृ0 सं0 28*
14. *यत्र–तत्र–सर्वत्र – शरद जोशी, भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन, नई दिल्ली, संस्करण–2009, पृ0 सं0 11*
15. *यथासम्भव– शरद जोशी, भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन, नई दिल्ली, संस्करण–2009, पृ0 सं0 87*
16. *जीप पर सवार इल्लियाँ – शरद जोशी, राजपाल एण्ड सन्ज प्रकाशन, नई दिल्ली, संस्करण–2011, पृ0 सं0 139*
17. *प्रतिदिन – भाग–तीन – शरद जोशी, किताबघर प्रकाशन, नई दिल्ली, संस्करण–2010, पृ0 सं0 317*

18. वही0, पृ0 सं0 291–292
19. नावक के तीर – शरद जोशी, किताबघर प्रकाशन, नई दिल्ली, संस्करण–2010, पृ0 सं0 90
20. प्रतिदिन – (भाग–एक) – शरद जोशी, किताबघर प्रकाशन, नई दिल्ली, संस्करण–2010, पृ0 सं0 413–414
21. नावक के तीर – शरद जोशी, किताबघर प्रकाशन, नई दिल्ली, संस्करण–2010, पृ0 सं0 62
22. यथासम्भव – शरद जोशी, भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन,नई दिल्ली,संस्करण–2010, पृ0 सं0 48–49
23. वही0, पृ0 सं0 48–49
24. हिन्दी गद्य लेखन में व्यंग्य और विचार – डॉ0 सुरेशकान्त,राधाकृष्ण प्रकाशन,नई दिल्ली, संस्करण–2004, पृ0 सं0 205
25. हिन्दी व्यंग्य और शरद जोशी – डॉ0 कमलेश सिंह, हिन्दुस्तानी एकेडमी, इलाहाबाद, संस्करण–2013, पृ0 सं0 25
26. व्यंग्यर्षि शरद जोशी – डॉ0 वागीश सारस्वत, शिल्पायन प्रकाशन, नई दिल्ली, संस्करण–2013, पृ0 सं0 170
27. यथासम्भव – शरद जोशी, भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन, नई दिल्ली, संस्करण–2010, पृ0 सं0 07